25-9-2020

बाल कक्षा :- वार्ता जवरखां s/o सगतेखा
रामगढ

विवरण (सारांश) प्रसंग - पंचतत्र - वर्णन

पंचतत्र

1 प्रकाश 2. वायु 3. अग्नि 4. पृथ्वी 5. जल

पंचतत्र प्रकृति (स्वभाव)

1. प्रकाश :- काल, क्रोध, लोभ, अंहकार, मोह माया, इन्सान के स्वभाव में उपलब्ध
हृदय से उठने वाले विचार भाव संवेदनाएं आदि प्रकाश में उपलब्ध

2. वायु :- धावन परसरण, उछलता, चंचलता संकोच पृथ्वी के अन्तर्गत ही मानव शरीर की संरचना है

3. जल :- रेत पित रक्त लाल, सफेद मानव शरिर में पानी के रूप में रक्त पित्त लाल सफेद है।

4. अग्नि :- क्षुधा, तृष्णा, प्रल्हास, निन्द्रा क्रान्ति एवं अग्नि पंचतंत्र के प्रकृति के रूप में क्षुद तृष्णा प्रल्हास निन्द्रा क्रान्ति (स्वभाव) के रूप में शरीर में रहते है

5. पृथ्वी :- हाड मॉस, नाडि, त्वचा, खुशाली पृथ्वी भी पंच तंत्र से बनी है। मानव शरिर एक मिलती है। जिसमें पंचतत्र संलग्न है।